Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2503I3VXIIIP0003

e-ISSN No. 2394-8426
Monthly Issue
MAR-2025
Issue–III, Volume–XIII

राष्ट्र निर्माण में साहित्य की भूमिका और उसकी प्रासंगिकता

मनोज कुमार
शोधार्थी (पी.एच.डी) हिंदी
दिल्ली विश्वविद्यालय
9868310402
mannufeb22@gmail.com

शोध सार-

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में साहित्य की भूमिका सर्वोच्च होती है. वर्तमान में भारत अपने नवनिर्माण की ओर अग्रसर है, बौद्धिक भ्रम से मुक्त हो रहा है, सर्जना के साधकों की जवाबदेही और ज़िम्मेदारी दोनों ही इस समय बढ़ी हुई हैं, क्योंकि बुद्धि पर बुद्ध की कलाई लगाने की आवश्यकता है। अपने वंशजों की संरचनाओं से इस ढाँचे को अलंकृत करने की महत्ती आवश्यकता है। साहित्य मानव समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रतिबिंबित करता है और समाज के नवनिर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साहित्य न केवल मनुष्य के विचारों, भावनाओं, और अनुभवों का संग्रह है, बल्कि यह समाज के सुधार और विकास का एक सशक्त माध्यम भी है। साहित्य वह सशक्त माध्यम है, जिसका व्यापक रूप से समाज पर प्रभाव पड़ता है। यह समाज में प्रबोधन की प्रक्रिया का सूत्रपात करता है। लोगों को जाग्रत करने का कार्य करता है और जहाँ एक ओर यह सत्य के सुखद परिणामों को रेखांकित करता है, वहीं असत्य का दुखद अंत कर सीख व शिक्षा प्रदान करता है। अच्छा साहित्य व्यक्ति और उसके चरित्र निर्माण में भी सहायक होता है। इसी कारण है समाज के नवनिर्माण में साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इससे समाज के दिशा-बोध, मार्गदर्शन के साथ-साथ उसका नवनिर्माण भी होता है।

बीज शब्द- साहित्य, नवनिर्माण, समाज, अभिव्यक्ति, सुधार, शताब्दी, माध्यम, प्रक्रिया

आलेख-

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी को भारतीय साहित्य के सांस्कृतिक एवं समाज निर्माण की शताब्दी माना जाता है। इस शताब्दी ने आज़ादी के साथसाथ समाज सुधार को भी संघर्ष- जागरण के लिये कभी अपनी प्राचीन संस्कृति को निष्ठा के साथ स्मरण किया है, तो कभी तात्कालिक परिस्थितियों पर गंभीरता के साथ चिंता भी अभिव्यक्त की। साहित्य कलावस्तु है। इसलिए उसकी पद्धति विज्ञान और शास्त्र की पद्धति से भिन्न होती है। शास्त्र तथ्यों और आँकड़ों में बोलता है। जबकि साहित्य संकेतों, घटनाओं और स्थितियों के माध्यम से बोलता है। साहित्य सबकुछ खोलकर नहीं कहता। यह उसकी संविदा के विरुद्ध है। सबकुछ खोलकर कह देनेवाला साहित्य साहित्य नहीं रहता, वह घोषणापत्र हो जाता है।-आठवें दशक के पश्चात् से अब तक के काल का साहित्य जिसे वर्तमान साहित्य कहना सार्थक होगा, फिर से अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़कर समाज निर्माण की भूमिका को वरीयता के साथ पूरा करने में जुटा है। राष्ट्र के निर्माण में साहित्य की भूमिका को स्पष्ट करते हुए श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा है, **" जिस राष्ट्र का साहित्य जितना व्यापक और विशाल होगा , उस राष्ट्र का राष्ट्रीय**

कलेवर उतना ही प्रखर और गरिमामय होगा।" इसके साथ-साथ निम्न पंक्तियों में भी साहित्य की महत्ता पर बल दया गया है,

"अन्धकार है वहीँ, जहाँ आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं है। ।"

"मानव मन में तरंगित होने वाली ललित भावनाओं और अनुभूतियों की शब्दों में सार्थक अभिव्यक्ति ही साहित्य है। यह मानव मन की कलापूर्ण-रमणीय अभिव्यक्ति है। ''साहित्य का जन्म और विकास मनुष्य के रूप में पशु के कायांतरण के साथ-साथ उसकी चेतना, भावना, आकांक्षा के मानवीय पक्ष के जन्म और विकास से भी संबंधित है। मनुष्य के मनुष्य बनने की प्रक्रिया और साहित्य की सृजन प्रक्रिया में कहीं न कहीं भिन्न-भिन्न संबंध है। दरअसल पशु से मनुष्य बनने की संपूर्ण संघर्ष-यात्रा का भाव-साक्षी साहित्य रहा है। मनुष्य के सुख-दुःख में उसका वास्तविक भाव-सहचर साहित्य ही होता है; हमारे पास जो साहित्य आज उपलब्ध है वह स्वभावतः एक स्तर पर विकसित मनुष्य का ही साहित्य है। उसका ज्ञात, लिखित और एकत्रित इतिहास भी उसी विकसित मनुष्य का इतिहास है ।"

समय के साथ-साथ साहित्य लेखन के प्रयोजन भी बदल गए हैं वर्तमान में साहित्यकार साहित्यिक पुरस्कार पाने, पद पाने, अर्थ पाने तथा अन्य लाभ के लिए साहित्यिक रचना कर रहा है। अपने कर्तव्य उद्देश्य से महकते हुए व्यर्थ का श्रम कर रहा है। आज निकलने वाली साहित्यिक पत्रिकाओं से ज्ञात होता है कि सचमुच कुछ मात्रा में ही उत्कृष्ट साहित्यकार और साहित्य है। वरना यह स्पष्ट है कि किस प्रकार विभिन्न प्रतिष्ठानों से निकलने वाली पत्रिकाएँ किस प्रकार साहित्यकार के समक्ष आने वाली चुनौतियों तथा जनता के लिए लड़ी जाने वाली लड़ाई को कुंठित कर रही है।

साहित्य समाज के मूल्य और आदर्शों को प्रस्तुत करता है और उन्हें जनमानस में स्थापित करने में सहयता करता है। कविताएं, कहानियां, उपन्यास, और नाटक आदि समाज के नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को उजागर करते हैं। साहित्यकारों का उद्देश्य देशपरक रचनाओं का रचना होना चाहिए। कबीर, प्रेमचंद, रेणु आदि हिंदी के प्रबुद्ध साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से नये राष्ट्र के उत्थान में अपनी अहम् भूमिका निभाई है।

साहित्य को ज्ञान के रूप में 19वीं सदी के अंत तक माना जाता रहा। हालांकि, बेकन द्वारा सुझाए गए अर्थों के सम्मिश्रण से संकेत मिलता है कि - किताबों और खुद किताबों के ज्ञान दोनों -18वीं सदी के मध्य में अर्थ में एक सामान्य परिवर्तन हुआ था। उस समय, साहित्य एक नए वस्तुनिष्ठ अर्थ में उभरा, जिसने साहित्यकार की गतिविधि या पेशे के साथसा-थ किताबों और लेखन के पूरे शरीर को साहित्य के क्षेत्र में नामित किया। अपने *लाइफ़ ऑफ़ काउली* (1779) में, जॉनसन ने एक लेखक का उल्लेख किया", जिसकी कल्पना की गर्भावस्था और भाषा की शान ने उसे साहित्य की श्रेणी में उचित रूप से ऊंचा स्थान दिलाया।

साहित्य समाज की समस्याओं को उजागर करता है और उनके समाधान की दिशा में सोचने को प्रेरित करता है। प्रेमचंद की कहानियां समाज की गरीबी, शोषण, निम्न जाति के लोगों पर अन्याय को सामने लाती हैं। यह समाज को सोचने और समस्याओं के समाधान के लिए प्रेरित करता है। साहित्य समाज के कमजोर और वंचित वर्गों की आवाज बनता है।

साहित्यिक इतिहास जैसा कि हम आज जानते हैंकिसी राष्ट्रीय साहित्य का इतिहास :, किसी अवधि, किसी शैली या मानवता के किसी हिस्से का इतिहास, साहित्यिक विद्वत्ता की अपेक्षाकृत नई विशेषता है। साहित्यिक इतिहास अधिक संकीर्ण अर्थ में, जीवनी जैसे स्थापित रूपों से विशेषज्ञता की एक स्पष्ट प्रक्रिया द्वारा विकसित

हुआ जो मूल रूप से -, निश्चित रूप से, साहित्य तक ही सीमित नहीं था एकल शैलियों और व्यक्तिगत कार्यों या - की कविताओं की आलोचना से, जिसे धीरेधीरे अतीत के ऐतिहासिक सर्वेक्षण को शामिल क-रने के लिए विस्तारित किया गया था। एक अलग अनुशासन के रूप में साहित्यिक इतिहास तभी उभरा जब जीवनी और आलोचना का मेल हुआ और जब राजनीतिक इतिहासलेखन के प्रभाव में, कथात्मक रूप का उपयोग किया जाने लगा। लेकिन यह एक ऐसी प्रक्रिया थी जिसमें लगभग दो शताब्दियाँ लगीं।

वर्तमान परिस्थितियों में साहित्य एवं साहित्यकारों पर महत्वपूर्ण जिम्मेवारी है कि वे राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाते हुए अपने लेखन के जरिए देश के सांस्कृतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाए इसके साथ-साथ आज हम बौद्धिक संक्रमण काल से गुजर रहे है एवं घटिया लेखन के जरिए युवा पीढ़ी के मन में गलत संस्कार आरोपित किए जा रहें है।

समाज के नव निर्माण में साहित्य की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह समाज के नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित करता है, सामाजिक समस्याओं को उजागर करता है, और समाज में जागरूकता और शिक्षा का प्रसार करता है। साहित्य समाज को सुधारने और विकसित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए, समाज के नव निर्माण के लिए साहित्य का अध्ययन और समझ आवश्यक है।

किसी राष्ट्र का साहित्य उन्नत व समृद्धशाली है तो वह राष्ट्र भी उन्नत तथा समृद्धशाली होगा और यदि वहां साहित्य का अभाव है, तो उस राष्ट्र का बने रहना मुश्किल होगा। साहित्य उन्नत व समृद्धशाली न होने से किसी भी राष्ट्र की आज नहीं तो कल संस्कृति, सभ्यता निश्चित ही नष्ट हो जायेगी। निर्जीव राष्ट्र चिरस्थायी नहीं रह सकता।

वर्तमान साहित्यकारों का कर्तव्य बनता है कि वे ऐसे साहित्य का निर्माण करें जिससे देश के आत्म-गौरव और गरिमा में और वृद्धि हो। देश का सर्वांगीण विकास और सामूहिक चारित्रिक पुनरुत्थान सत्साहित्य पर ही निर्भर करता है। आज साहित्यकार अपने कर्तव्य का पालन न करते हुए देशवासियों का ईमानदारी से पथ-प्रदर्शन नहीं कर रहे। यही कारण है कि देश का चारित्रिक विकास धीमा हो गया है, कर्त्तव्यहीनता और स्वार्थ-लोलुपता हर जगह देखने को मिलती है।

निष्कर्ष-

नये युग के निर्माण और जन चेतना के उद्बोधन में वैचारिक क्रांति की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वैचारिक क्रांति का सशक्त आधार पुस्तकें है। पुस्तक की उपयोगिता का बखान निश्चित ही पुस्तकसंस्कृति को एक नये युग में ले - जायेगा। साहित्य के महत्व को वही आंक सकता है, जो उसका पारायण करता है। पुस्तकें चरित्र निर्माण का सर्वोत्तम साधन हैं। उत्तम विचारों से युक्त पुस्तकों के प्रचार और प्रसार से राष्ट्र के युवा कर्णधारों को नई दिशा दी जा सकती है। देश की एकता और अखंडता का पाठ पढ़ाया जा सकता है और एक सबल राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है। भारत ही बल्कि दुनिया को बदलने में सत्साहित्य की निर्णायक भूमिका असंदिग्ध हैं। हजारीप्रसाद द्विवेदी ने तभी तो कहा था कि साहित्य वह जादू की छड़ी है, जो पशुओं में, ईंटपौधों में भी -रों में और पेड़पत्थ- विश्व की आत्मा का दर्शन करा देती है।' इसलिये साहित्य ही वह मजबूत माध्यम है जो हमारी राष्ट्रीय चेतना को जीवंतता प्रदान कर एवं भारतीय संस्कृति की सुरक्षा करके उसे पीढ़ीपीढ़ी संक्रांत कर सकता है। सत्साहित -दर- रव को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम हैही भारतीय संस्कृति के गौ, इसी से जीवन सरस एवं रम्य हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ-

कोलख्यान प्रफुल्ल, साहित्य, समाज और जनतंत्र आनंद प्रकाशन, कोलकाता, प्रथम संस्करण,
रेणु, फणीश्वरनाथ. (1954). **मैला आँचल**. पटना: समता प्रकाशन.
शुक्ल रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
सिंह नामवर, आधुनिक विश्व साहित्य और सिद्धांत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
शर्मा देवेन्द्र कुमार, हिंदी साहित्य का विकास: एतिहासिक दृष्टिकोण, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
पत्रिका- साहित्य अमृत, 2020 दिसंबर अंक